बालविज्ञान प्रस्तुत

दादा भगवान

भाग-४

चित्रकथा

प्रस्तावना

'दादा भगवान' वर्तमान युग के अद्वितीय आत्मज्ञानी पुरुष थे। उन्हें बचपन से ही आत्मा को पहचानने की, परम तत्व को प्राप्त करने की लगन थी। रोज़मर्रा के जीवन में होनेवाली घटनाओं का वे वैज्ञानिक तरीक़े से विश्लेषण करते थे, उनके पीछे रही हुई पुरानी भ्रामक लौकिक मान्यताओं से दूर रहकर वे सच्ची समझ को अपनाते थे। तार्किक प्रश्नावलियों द्वारा चिंतन करके दुनिया की पज़ल सोल्व करने का उन्होंने अद्‌भुत तरीक़ा अपनाया था। उनके गृहस्थ जीवन की और व्यवसायिक जीवन की कितनी ही प्रेरणादायक घटनाएँ उनके ऐसे ही संशोधक हृदय को प्रतिबिम्बित करती हैं।

सभी के लिए दादा भगवान की बातें जीवन जीने की कला सीखने के लिए बहुत सुंदर दिशानिर्देष करेंगी और जीवन के ध्येय को समझने की प्रेरणा देंगी। यह पुस्तक हमें उनके प्रेरणादायक जीवन की घटनाओं का हृदयस्पर्शी परिचय करवाती है।

दादा भगवान के जीवन की घटनाओं को उनके ही श्रीमुख से निकली हुई वाणी में से लेकर उसी रूप में चित्रांकित करने के प्रयत्न किए गए हैं। आपको इस पुस्तिका में चित्र या लेखांकन में कोई भी त्रुटि लगे तो वह संकलनकर्त्ता की है। ऐसी कोई भी कमी रह गई हो तो उसके लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

- जय सच्चिदानंद

प्रकाशक :
श्री अजीत सी. पटेल
महाविदेह फाउन्डेशन
५, ममतापार्क सोसाइटी, नवगुजरात कॉलेज के पीछे,
उस्मानपुरा, अहमदाबाद-३८००१४, गुजरात, भारत
फोन : (०७९) २७५४०४०८

मुद्रक :
महाविदेह फाउन्डेशन
पार्श्वनाथ चेंम्बर्स, नई रिज़र्व बैंक के पास,
इन्कमटेक्स, अहमदाबाद-३८००१४, गुजरात, भारत
फोन : (०७९) २७५४२९६४

प्राप्ति स्थान :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाइवे, अडालज
जिला-गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात-भारत
फोन: (०७९) ३९८३००३४

email : balvignan@dadabhagwan.org
website : www. dadabhagwan.org
kids.dadabhagwan.org

प्रथम आवृत्ति : २००० कॉपी नवंम्बर २०१३
मूल्य : भारत रु.४५

© : All Rights Reserved - Mahavideh Foundation
Address as above

दादा भगवान

भाग - ४

'दादा भगवान' के नाम से विख्यात श्री अंबालालभाई मूलजी भाई पटेल अपने भागीदार के साथ कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय करते थे। उस दौरान...

अंबालालभाई के भागीदार कांति भाई के छोटे भाई जयंति भाई ग्रैजुएट थे। उनके पिता जी ने अंबालालभाई को उन्हें व्यापार का काम सिखाने की सलाह दी।

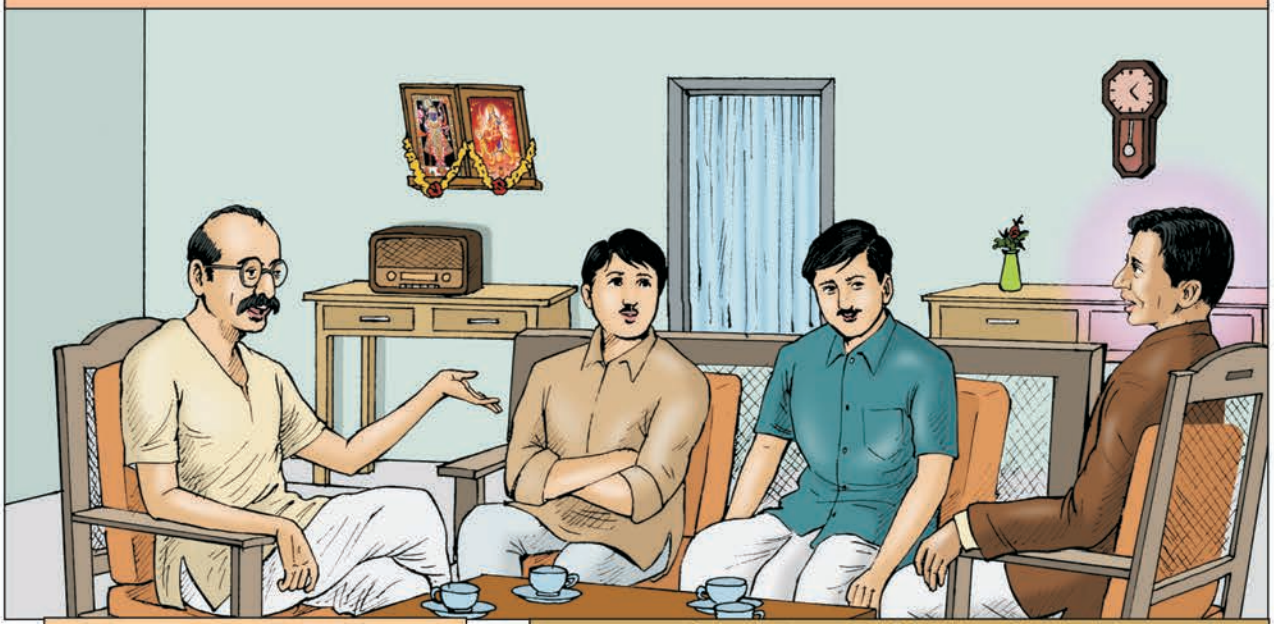

व्यापार तो सीख ही लेंगे लेकिन पहले रोज़मर्रा के जीवन के लिए आवश्यक, मूलभूत चीज़ें सिखाऊँगा।

इस प्रकार जयंति भाई अंबालालभाई के पास रहने आ गए। सबसे पहले अंबालाल भाई ने उन्हें भिंडी खरीदकर लाने का काम सौंपा।

जयंतिभाई तो चिढ़ गए।

मैं पढ़ा-लिखा ग्रैजुएट और मुझे ऐसा काम सौंपा? घर में नौकर है फिर भी ऐसा काम मुझे करना पड़ेगा? लेकिन उनसे कैसे कह सकते थे?

भुनभुनाते हुए वे सब्ज़ी लेने निकले।

सब्ज़ीवाली ने दिए, वही ले आया।

क्यों भाई, भिंडी ले आया क्या? सब्ज़ीवाली ने दी वे ही ले आया या तू छाँटकर लाया?

हं... तो अब भिंडी को तोड़कर बता, देखते हैं।

जयंतिभाई ने भिंडी तोड़कर देखी तो पाँच-छः भिंडियाँ नहीं टूटीं।

बोलो, ये भिंडियाँ जो नहीं टूटी हैं, वे तू खा सकेगा क्या?

ये तो नहीं खा सकते।

तो फिर ऐसी भिंडी लाए क्यों? भिंडी की सब्ज़ी खानी है या नहीं?

हाँ, लेकिन ऐसा तो मुझे ध्यान ही नहीं रहा।

ध्यान रखना पड़ेगा न? शादी के बाद पत्नी सब्ज़ी लाने का कहे और ऐसी सब्ज़ी लाओगे तो वह क्या कहेगी?

फिर दूसरे दिन अंबालालभाई ने उन्हें खाना बनाने की ट्रेनिंग देनी शुरू की। रोटी बनाने का काम सौंपा। जो वे ठीक से नहीं कर पाए और रोटियाँ टेढ़ी-मेढ़ी बनीं।

फिर कटोरी से काटकर गोल पूड़ियाँ बनाना सिखाया। सभी पूड़ियाँ फूलकर गोल बनें। इस तरह से तलने का तरीका भी सिखाया। आलू की सब्ज़ी बनानी सिखाई।

इतना सिखाने के बाद फिर अंबालालभाई ने जयंतिभाई को व्यापार के खाते में से कुछ पूंजी दी।

यह अपने व्यापार की पूंजी है, इसका हिसाब रखना। जो कुछ भी खर्चा हो वह लिखते रहना। आपको चाय-कॉफी पीनी हो या कोई व्यसन हो या किसी को रास्ते में कुछ दान दिया हो, वह सारा खर्चा बहीखाते में लिखना।

उनके पास जो भी रकम थी, वह सब बहीखाते में जमा करवा दी। फिर जयंतिभाई जो कुछ भी पैसा खर्च करते वह उसमें लिख लेते, लेकिन अंबालालभाई की तेज़ नज़र में उनकी एक चीज़ पकड़ में आ गई। जयंतिभाई रोज़ खाना खाकर नीचे जाते और थोड़ी देर बाद वापस ऊपर आते थे।

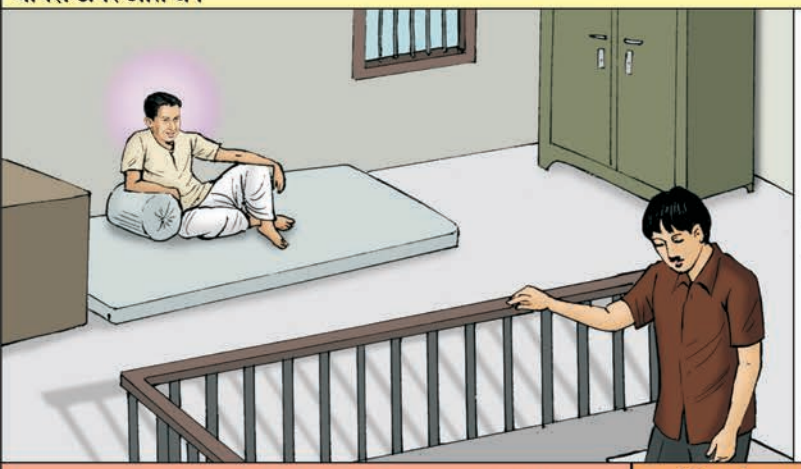

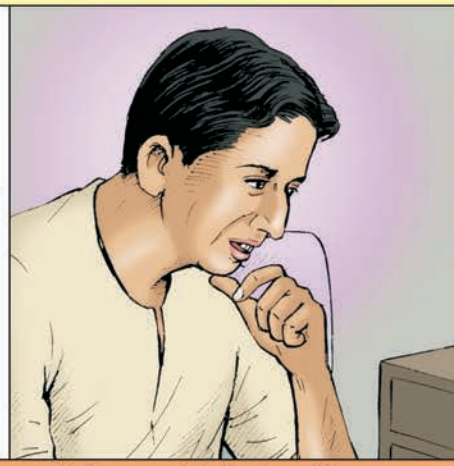

एक बार जयंतिभाई एक दिन के लिए कहीं बाहर गए थे तो अंबालाल भाई रोज़ के समय पर नीचे उतरकर पान की दुकान पर पहुँचे।

जयंतिभाई वापस आने के बाद नीचे सिगरेट पीने गए, तब पानवाले ने उनसे कहा कि अंबालाल काका तो आपकी सिगरेट ऊपर ले गए हैं।

फिर एक बार अंबालालभाई ने जयंतिभाई को कारखाने के काम के लिए ढाई इंच लंबे चौदह आनी के बोल्ट लेने भेजा। बताई हुई दुकान से बोल्ट तो ले आए लेकिन जब बिल बताया तब अंबालालभाई को तुरंत ही पता चल गया कि दुकानदार ने बिल में लिखे वजन जितने बोल्ट नहीं दिए हैं, कम दिए हैं।

अंबालालभाई ने तुरंत तराजू मंगाकर तौलकर बताया तो लिखे हुए वजन से बोल्ट कम निकले हैं।

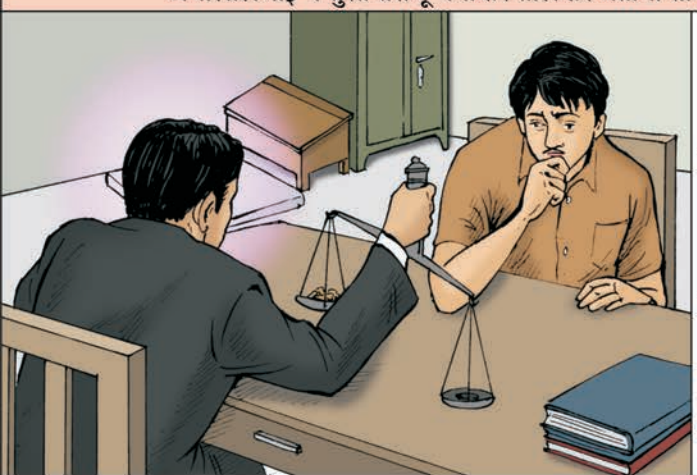

अंबालालभाई सभी तरह के कामों में सावधानी रखने का पाठ पढ़ाते थे। किसी भी काम को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए सतर्क रहकर ध्यान रखना, वही मूल सीख है न? लेकिन काम में खुद की जो गलती होती थी उसे सुनकर सुधारने के बजाय जयंतिभाई अंबालालभाई के वहाँ से चले ही गए।

कुछ सालों बाद उन्हें इस सीख की कीमत समझ में आई।

अंबालालभाई का स्वभाव खूब मिलनसार था। खूब आग्रहपूर्वक मित्रों और संबंधियों को खुद के घर रहने के लिए बुलाते थे।

कैसे हो? बहुत दिनों में दिखे? हमारे घर क्यों नहीं आते हो? चलो घर पर। चार दिन रहना हमारे साथ।

रास्ते में कोई जान-पहचानवाला मिले तो उसे इस तरह घर पर आने का आग्रह करते थे।

अरे काका, अभी मेरे साथ घर चलिए, नहीं तो फिर कब आएँगे? आना ही पड़ेगा।

इस तरह कई लोगों को घर पर ले आते थे। इस तरह अंबालालभाई खुद के अहंकार को पोषण देते कि लोगों में मेरा कितना अच्छा दिखेगा। मेरा स्वभाव कितना अच्छा माना जाएगा।

लेकिन फिर इस तरह आनेवाले मेहमानों की वजह से उन्हें खूब कड़वे अनुभव भी हुए।

अंबालालभाई आज तो मुझे घुमाने ले जाइएगा, हाँ। और वह जो नई पिक्चर आई है, हम वह भी देखते आएँगे।

आज तो मुझे काम पर जाना पड़ेगा।

नहीं, नहीं, आप साथ में होंगे तभी मज़ा आएगा न। काम तो रोज़ का है, एक दिन में क्या बिगड़ जानेवाला है?

इस तरह मेहमानों के साथ घूमने-फिरने में ही अंबालालभाई का दिन गुज़र जाता। उन्हें अपने काम के लिए या खुद के निजी कामों के लिए पूरी तरह से समय नहीं मिल पाता था। और फिर इस तरह हर एक को सिनेमा दिखाने के पैसे भी अंबालालभाई को ही खर्च करने पड़ते थे न।

यह तो मेरी बात मुझ पर ही भारी पड़ने लगी है। कभी-कभी घूमना हो सकता है, लेकिन रोज़-रोज़ ऐसा कैसे चलेगा? समय भी बरबाद होता है और पैसे भी। और घर की स्त्रियों की मेहनत भी बहुत बढ़ जाती है और पूरे दिन काम रहता है। यह तो मेरी आदत मुझ पर ही भारी पड़ी। मेरे अच्छा दिखाने के अहंकार को पोषण मिला, उसी से मैं छला गया।

अंबालालभाई को जब भी मन में कोई पहेली खड़ी होती, तब वे बिस्तर में सोते-सोते चिंतवन करते।

ये सभी लोग मेरे ही बनाए हुए मेहमान थे। मैंने ही आग्रह करके उन्हें बुलाया। ऐसे आगे बढ़कर आग्रह करने की कोई ज़रूरत नहीं होनी चाहिए। यह तो मेरा ही पागलपन था। अब से मैं ऐसा आग्रह करके किसी को निमंत्रण देना बंद कर दूँगा। हाँ, जो अपने आप आएँ, वही अतिथि कहलाते हैं। और ऐसे ज़रूरी काम से आनेवाले या मिलने आनेवाले कभी-कभार और कुछ ही होते हैं। उस तरह जो अतिथि बनकर आएँ, उनका पूरी तरह से ध्यान रखना चाहिए।

अंबालालजी में एक अच्छा गुण यह था कि खुद की गलती को पहचानते ही तुरंत ही स्वीकार कर लेते थे। उसका विश्लेषण करके यह सोच लेते थे कि उसमें से कैसे छूटें और उस पर अमल करते थे।

एक बार देर रात को अंबालालभाई खुद के घर जा रहे थे। उसी समय मामा की पोल में एक सेठ दौड़ते-दौड़ते आए। सेठ बहुत मोटे थे। इसलिए हाँफते जा रहे थे और दौड़ते जा रहे थे।

मामा की पोल की नुक्कड़ पर पन्नालाल की जलेबी की दुकान थी।

हाँफते-हाँफते, जैसे-तैसे, टूटी-फूटी बात करके सेठ तो पलभर में आगे दौड़ गए। पन्नालाल की जलेबी बहुत मशहूर थी। उनकी दुकान बंद होने से पहले ही सेठ वहाँ पर पहुँच गए।

एक बार गर्मी की दोपहर को अंबालालभाई, झवेर बा और हीरा बा खाना खाने बैठे। लगभग बारह बजे होंगे। तभी दरवाज़े पर चार मेहमान आ गए। खाना पूरा होने लगा था और मेहमानों को आते देखा तो झवेर बा के मुँह से निकल गया।

झवेर बा बहुत ही नोबल थे। गर्मी की दोपहरी के बीच भोजन खत्म होने के बाद तुरंत ही मेहमानों के आदर-सत्कार के लिए फिर से वापस पूरा खाना बनाने के विचार से ही ज़रा परेशान होकर उनके मुँह से यह निकल गया।

अंबालालभाई के घर में हमेशा मेहमानों की खूब आना-जाना रहता था। भोजन के समय आ पहुँचे मेहमानों को वे कभी-भी भोजन करवाए बिना नहीं जाने देते थे। उस दिन भी हीरा बा और झवेर बा ने जल्दी-जल्दी चावल-दाल चढ़ाकर वापस नए सिरे से पूरा भोजन बनाया और मेहमानों को खिलाया।

खुद की माता झवेर बा के उद्‌गार अंबालालभाई को अच्छे नहीं लगे।

मेहमानों के जाने के बाद माता झवेर बा और पत्नी हीरा बा को उन्होंने अपने पास बुलाया और ज़रा सख्ती से कहा...

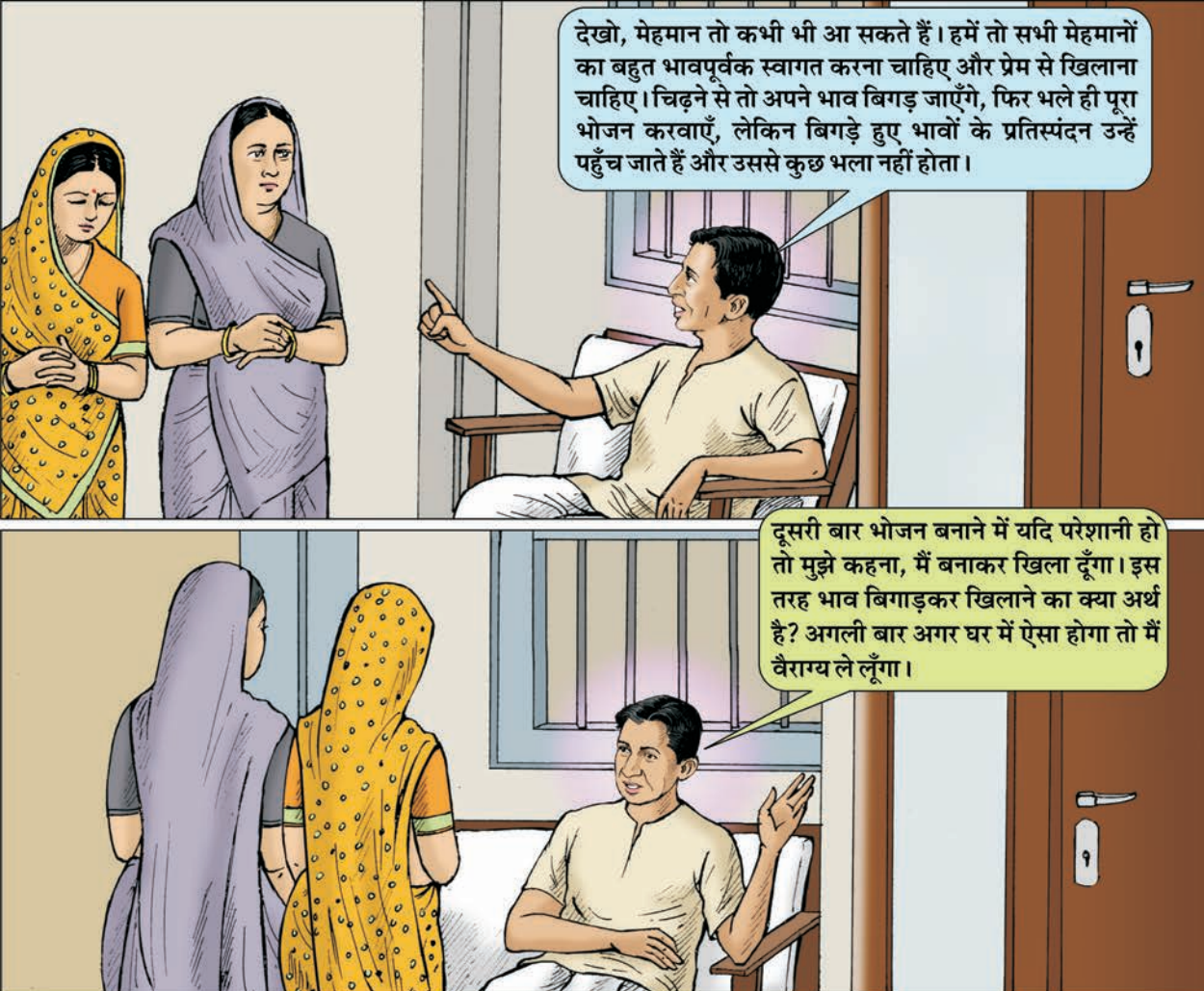

अंबालालभाई का प्रभाव देखकर झवेर बा और हीरा बा के सभी विचार बदल गए।

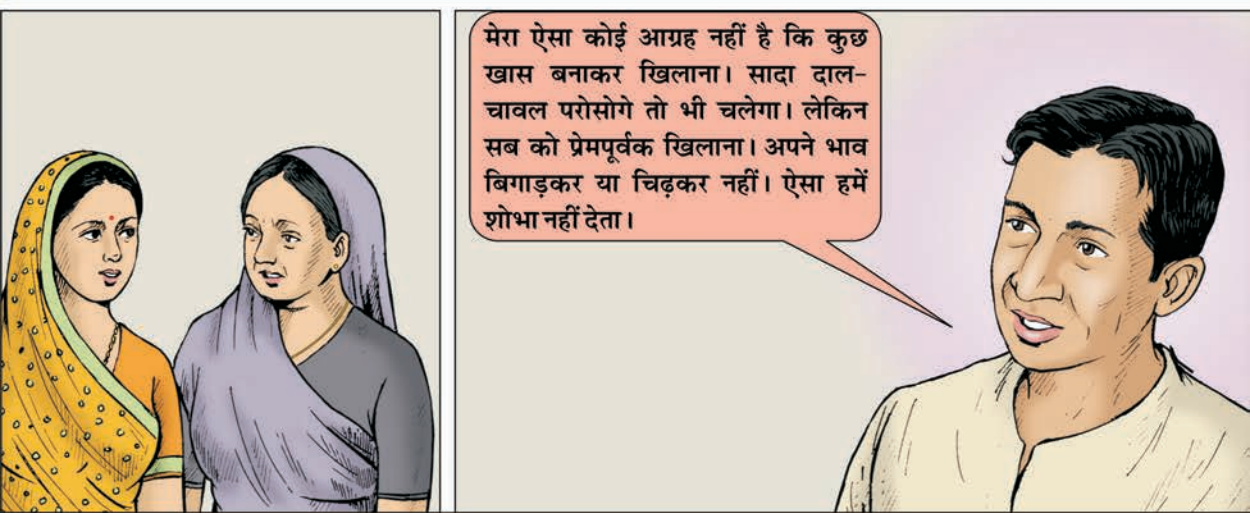

अंबालालभाई के हृदय में यथार्थ आतिथ्यधर्म को निभाने की सुंदर स्पष्टता थी।

एक बार ऐसा हुआ कि किसी ऑफिसर ने उनका काम अचानक ही रद्द कर दिया। इस वजह से दस हज़ार रुपये का नुकसान हो गया। उस ज़माने में दस हज़ार का नुकसान यानी बहुत ही बड़ा नुकसान। इस वजह से अंबालालभाई को ठेठ अंतर में गहरे तक असर पहुँचा और वे बहुत विचलित हो गए। एक बार रात को चिंता नहीं मिट रही थी और नींद नहीं आ रही थी।

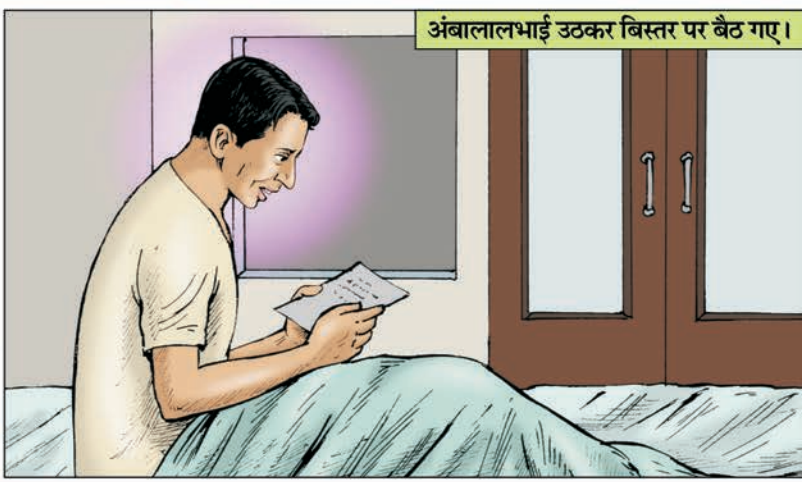

और एक कागज़ लेकर सभी चिंताएँ उसमें लिख दीं और फिर उसकी पुड़िया बनाकर, उस पर मंत्र पढ़कर विधियाँ कीं। उसके बाद उसे दो तकियों के बीच दबाकर सो गए। तब फिर उन्हें नींद आ गई। फिर भाव से उस पुड़िया को उन्होंने विश्वामित्री नदी में बहा दिया। उसके बाद चिंता कम हो गई।

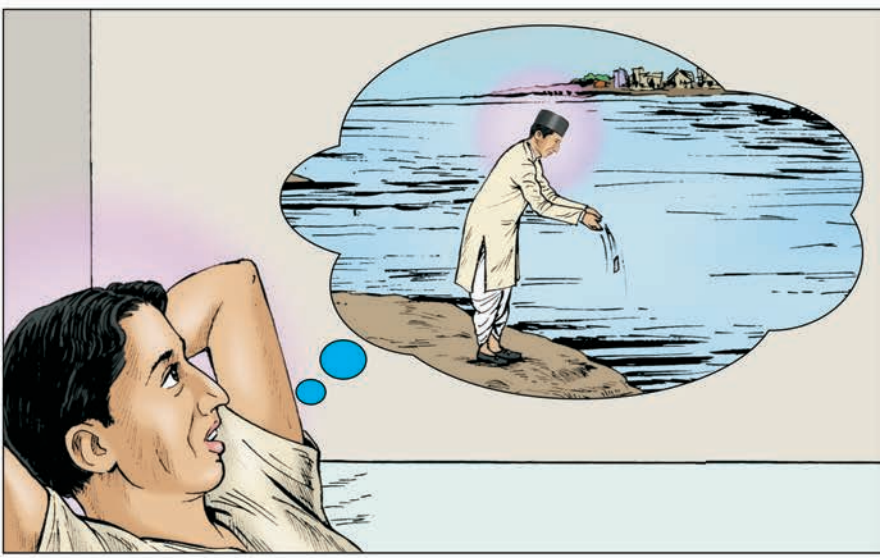

उनके पास, पॉज़िटिव दृष्टिकोण ढूँढकर अंतर में समाधान पाने की ग़ज़ब की शक्ति थी। इसलिए ऐसे गंभीर असर को भी झाड़कर उससे छूट जाते थे। वास्तव में ज्ञान प्रकट होने के बाद से सभी चिंताओं का पूरी तरह से नाश हो गया।

खुद के व्यवसाय में फायदे की बात सुनकर खुश होना और नुकसान की बात सुनकर चिंता होना, वह तो समझा जा सकता है लेकिन अंबालालभाई तो ऐसा भी सोच लेते थे कि व्यापार के फायदे-नुकसान की बात सुनकर सामनेवाले व्यक्ति को दुःख न हो या आघात न लगे, उसके लिए वे खूब सावधान रहते थे।

हाँ, उन दोनों को एक ही चीज़ के बारे में अलग-अलग जवाब एक खास हेतु से दिए थे।

ऐसे बिल्कुल अलग-अलग क्यों बताया? वह समझ में नहीं आया।

देख तुझे समझाता हूँ, कल जिस व्यक्ति को मेरे व्यापार के बारे में पूछताछ करनी थी, वह मेरा विरोधी था। उसके हृदय में स्पर्धा का भाव था। अगर उसे ऐसा पता चले कि मेरा काम अच्छा चल रहा है, तो उसे दुःख होगा। मुझे नुकसान हुआ, ऐसा पता चले तो आनंद में आ जाएगा, इसलिए मैंने उसे नुकसान के बारे में थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर बताया। ताकि उसे मेरे प्रति द्वेष नहीं हो। बल्कि मन में संतोष रहे कि चलो इस बार इनका प्रभाव मुझ से कुछ कम रहा।

बात तो सही है, सामनेवाले व्यक्ति को नुकसान हो रहा है, ऐसा जानकर उसके साथ स्पर्धा करने का या उसके प्रति ईर्ष्या करने का भाव ही नहीं होगा।

और आज जो भाई पूछताछ कर रहे थे, वे मेरे हितेच्छु थे। उन्हें अगर मैं सही बात बता दूँ कि मुझे बड़ा नुकसान हुआ है तो बेचारे घबरा जाएँगे और दुःखी हो जाएँगे इसलिए उन्हें तो मुझे ऐसा ही कहना पड़ा कि खास नुकसान नहीं हुआ है, ताकि उनके दिल में ठंडक रहे।

आपको बड़ा नुकसान हुआ है और नुकसान होने के बावजूद भी आप तो इस तरह बात कर रहे हैं ताकि सामनेवाला व्यक्ति आनंद में ही रहे।

किसी व्यक्ति को मेरी वजह से कभी भी दुःख नहीं हो, हमेशा सुख और आनंद ही प्राप्त हो, मैंने यही जीवनसूत्र अपनाया है।

विवाहित जीवन के शुरूआत के सालों में एक बार अंबालालभाई का हीरा बा के साथ कुछ मन मुटाव हो गया।

सुनते हैं क्या? मेरे भाई की चार बेटियों में से पहली बेटी की शादी हो रही है। हम शादी में क्या देंगे?

इस अलमारी में चांदी के छोटे-छोटे बर्तन रखे हैं। नए बनवाने के बदले उनमें से एक-दो दे देना।

जब आपके मामा की बेटी की शादी हो, तब तो इतने बड़े-बड़े चांदी के तसले देते हो न।

अरे, आज तो अपन फँस गए। हमारे बीच 'मेरा-तुम्हारा' बोलने का रिवाज़ कभी भी नहीं रखा। घर में हमेशा अपना और अपने ही बोलते हैं। हम वन फैमिली, और उसमें ये 'मेरा-तुम्हारा' बोलें तो फिर क्या बाकी रहा?

अब यह बाज़ी तुरंत पलट देनी पड़ेगी। ज़रूर मेरे बोलने में कहीं गलती हो गई है, नहीं तो ये एकदम से 'मेरा-तुम्हारा' क्यों बोलती? अब ऐसा मन दुःख हो और मतभेद पड़ जाए, उससे पहले ठीक कर देना चाहिए। मन भेद डालने के बजाय तो पलट जाना अच्छा।

पल भर में ही ये सभी विचार अंबालालभाई के मन में से गुज़र गए और तुरंत ही सावधान होकर उन्होंने बाज़ी सुधार ली।

अरे नहीं, मैं ऐसा नहीं कहना चाहता। मेरी बात अलग है, आपके समझने में ज़रा फर्क पड़ गया।

तो फिर आप क्या कहना चाहते हैं?

इस अलमारी में से चांदी के छोटे-छोटे बर्तन देना और ऊपर से पाँच सौ रुपये नकद देना। वे उनके काम आएँगे।

ना बाबा! इतना सब कहीं दिया जाता होगा। आप तो बिल्कुल भोले के भोले ही रहे।

ओह..अब हम जीत गए। अगर मतभेद पड़ जाता न, तो मन में गांठ रह जाती। अब मलहम पट्टी कर दी इसलिए बच गए।

ऐसा लगता है? तो फिर आपको जितने देने हो उतने दे देना। चारों भतीजियाँ अपनी बेटियाँ ही हैं न।

यह सुनकर हीरा बा खुश हो गए।

विवाहित जीवन में मतभेद खड़ा हो, तो तुरंत ही वहाँ पर यह पता लगाकर कि गलती कहाँ हुई, अंबालालभाई मलहम पट्टी कर देते। कोई भी संयोग झगड़े में परिणामित नहीं हो, उसके लिए वे हमेशा सावधान रहते थे। इस घटना के बाद पूरे विवाहित जीवन में उन्होंने वापस कभी भी मतभेद नहीं होने दिया।

अंबालालभाई को १९३९-४० के अरसे में हालोल में पुल बनाने का कॉन्ट्रैक्ट मिला था। उस गाँव में एक बनिया था। पूरे दिन तो काम करता लेकिन फिर रात को जुआ खेलने जाता, पैसे बिगाड़ता और बहुत देर से घर पर वापस लौटता। घर पहुँचता तो उसकी पत्नी उसकी खबर ले लेती और लकड़ी से मारती।

एक दिन गाँव के सभी लोग अंबालालभाई को बुलाने आए।

वे सभी लोग अंबालालभाई को उस बनिए के घर के पास ले गए। उसके घर का दरवाज़ा तो अंदर से बंद किया हुआ था लेकिन अंदर से लकड़ी से पिटाई होने की आवाज़ सुनाई दे रही थी और साथ ही साथ 'ले लेती जा', 'ले लेती जा' बनिए की ऐसी आवाज़ आ रही थी। गाँव के लोगों ने अंबालालभाई को बताया।

हाँ सेठ, बनिए को मार पड़ती है फिर भी वह रोज़ 'ले लेती जा' ऐसा ही कहता है।
यह घोंसला अच्छा है। आज यह नया शास्त्र पढ़ा हमने! पत्नी पति को लकड़ी से मार रही है और पति चिल्लाने के बजाय 'ले लेती जा', 'ले लेती जा' ऐसा ही बोलता जा रहा है।
लेकिन यह बनिया बहुत अक़्लवाला है। देखो न, खुद की आबरू रखने के लिए कैसा नुसखा ढूँढ निकाला। खुद को वेदना हो रही है फिर भी वह चिल्लाने के बदले, जैसे खुद ही मार रहा हो और खुद का ही ज़ोर चलता हो, ऐसा दिखावा करता है।
सेठ, आपको यह कौतुक दिखाने के लिए ही लाए हैं।
पति-पत्नी के मतभेद तो हर एक घर में होते ही है।
हमें आबरू नहीं रखनी है, अपनी आबरू तो है ही।
दुनिया तो रंग-बिरंगी है न। हर समय कोई नया ही रंग देखने को मिलता है। यह जगत् कैसा घोटालेवाला है!

बोरसद में अंबालालभाई का कॉन्ट्रैक्ट का काम चल रहा था। अमु मियाँ तो पोस्टमेन थे और बहुत अच्छे स्वभाव के थे। अंबालालभाई उन्हें 'सेठ, सेठ' कहकर पुकारते, अमु मियाँ का बेटा कमु मियाँ बहुत पहुँचा हुआ था। मूलतः थे बोरसद के और पूरे खेड़ा जिले में उसका दबदबा था। सरकार के साथ, कलेक्टर के साथ मिला हुआ था इसलिए पूरे बोरसद शहर को अपने मरज़ी के मुताबिक चला सकता था। राजा जैसा ही बन बैठा था। ऐसा सिर चढ़ा था कि भरे बाज़ार में लोगों को मारते हुए भी हिचकिचाता नहीं था। लोग उसे बिल्कुल टुच्चे इन्सान और शेर के रूप में ही पहचानते थे।

एक बार कमु मियाँ ने बीच रास्ते में भादरण के एक कार्यकर्ता को मारा। अंबालालभाई को कमु मियाँ की ऐसी बेहुदा हरकत ठीक नहीं लगी।

इसके जवाब में कमु मियाँ ने नालायकी से कहलवाया...

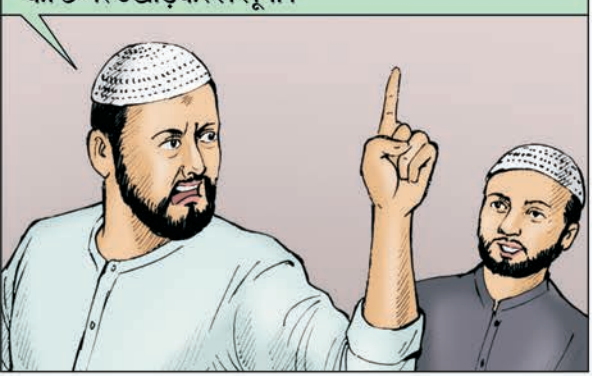

जब उन्होंने कमु मियाँ को मिलने के लिए बुलवाया, तब कमु मियाँ ने उनसे सीमेन्ट की बोरियाँ मांगी।

पूरे जिले में यह मशहूर था कि कमु मियाँ किसी की नहीं सुनता है। अंबालालभाई ने रौब तो जमाया कि ऐसे कोई कमु मियाँ आए तो भी यों ही सीमेन्ट की बोरियाँ नहीं दे सकते।

अंबालालभाई कमु मियाँ की दुकान पर मिलने पहुँचे, तब उन्हें देखते ही कमु मियाँ ढीले पड़ गए। अंबालालभाई के प्रताप को देखते ही कमु मियाँ पर असर होने लगा।

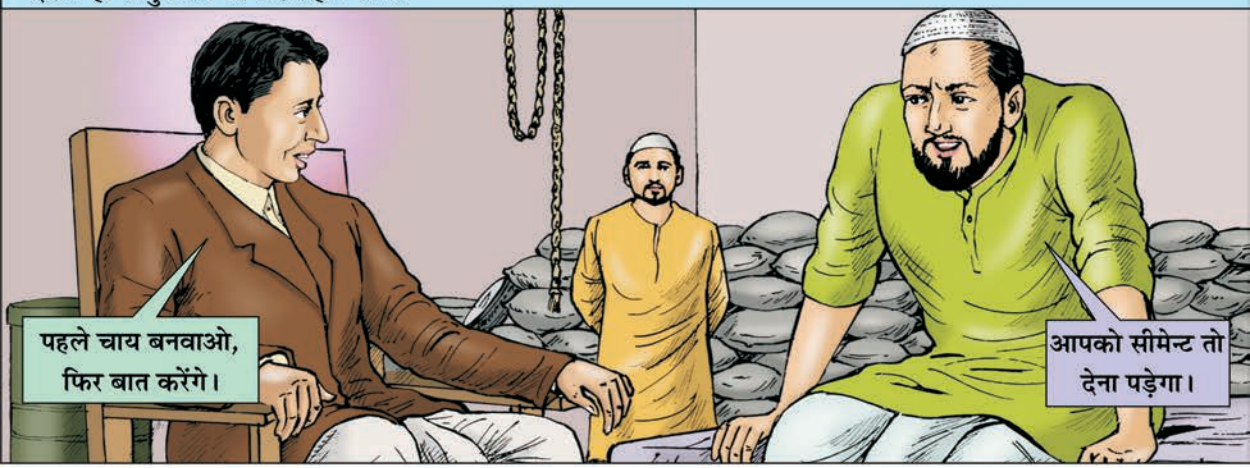

अंबालालभाई ने सोचकर देखा कि ऐसे दबाव डालनेवाले व्यक्ति के सामने विरोध करने का कोई फायदा नहीं था। 'नहीं दूँगा' कहने से तो वह उल्टा चलेगा और गाड़ी लूट लेगा तो क्या आबरू रहेगी? इसलिए उन्होंने इस तरह बातचीत करके उसी से साफ-साफ कहलवा दिया कि बोरियाँ मुफ्त में नहीं लेनी थीं, लेकिन कीमत चुकानी थी या फिर वापस दे देनी थीं।

ऐसे में एक बार लद्दाख में गोली चलने के समाचार मिले। उसमें मारे गए लोगों में से दो गुजरात के युवक थे। दोनों ही लगभग पच्चीस साल के लड़के थे। भादरण के रतिलाल भाईलालभाई काका का बेटा और दूसरा धर्मज का किसी मालधारी का बेटा था। उनकी लाशें लद्दाख से बड़ौदा लाई गईं।

भादरण के वासी अपने गाँव के बेटे की लाश को भादरण ले जाने के लिए गाड़ी ढूँढने लगे। सौ रुपये देकर भादरण ले जाने के लिए एक ट्रक लिया। कमु मियाँ ने ही ट्रक दिया।

धर्मजवाले भी अपने गाँव के बेटे की लाश को गाँव पहुँचाने के लिए गाड़ी ढूँढ रहे थे। उनकी स्थिति ट्रक के सौ रुपये देने जैसी नहीं थी। वे परेशान हो रहे थे।

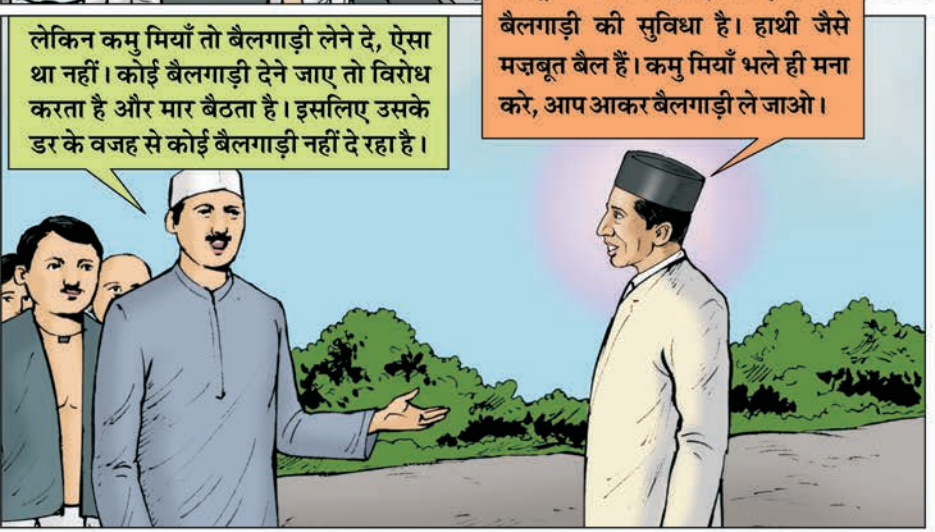

उन दिनों अंबालालभाई में ग़ज़ब की हिम्मत थी और अहंकार का रौब भी खूब था। इसलिए ऐसा कहा। इसके साथ ही अंबालालभाई ने खुद ही लड़के की लाश को धर्मज पहुँचाने का बीड़ा उठा लिया। खुद की बैलगाड़ी तैयार करवाई और उसमें उस लड़के की लाश रखकर उसे घास से ढक दिया ताकि लोगों को पता न चले।

कमु मियाँ को उस बात का पता चले बिना कैसे रहता? किसी बैलगाड़ीवाले की हिम्मत नहीं थी गाड़ी देने की। तो फिर बैलगाड़ी देनेवाले अंबालालभाई के पीछे पड़े बिना वह कैसे रह सकता था? उसने तुरंत ही अंबालालभाई के विरुद्ध फौजदारी केस दायर कर दिया। उसमें तरह-तरह के बहाने निकालें और गलत-सलत आरोप लगाए कि यह कॉन्ट्रैक्टर भादरण वासियों को इकट्ठे करके उकसाता है। यह करता है, वह करता है। सरकार का सिमेन्ट चोरी कर लेता है, निकाल लेता है, ऐसे तरह-तरह के आरोप लगाए।

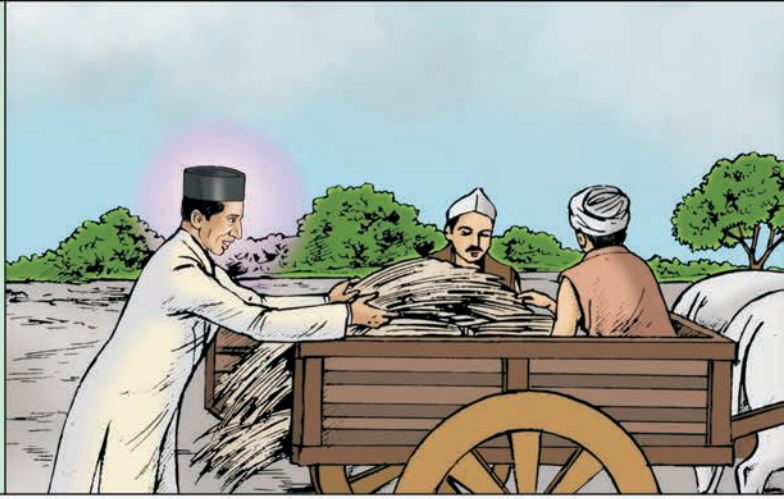

अंबालालभाई ने जो सिमेन्ट की बोरियाँ कमु मियाँ को दी थीं न, वे कुछ समय तक कमु मियाँ की तरफ से वापस नहीं मिलीं। न ही कीमत चुकाई गई। सौ बोरियों के सवा दो सौ रुपये बाकी थे। एक बार जब कमु मियाँ बड़ौदा गया, तो अंबालालभाई ने उसे याद दिलाया कि तुम्हारा ड्राफ्ट अभी तक मिला नहीं है। तो उसने 'भेज देंगे' कह दिया लेकिन फिर भी बहुत समय तक पैसे नहीं भिजवाए।

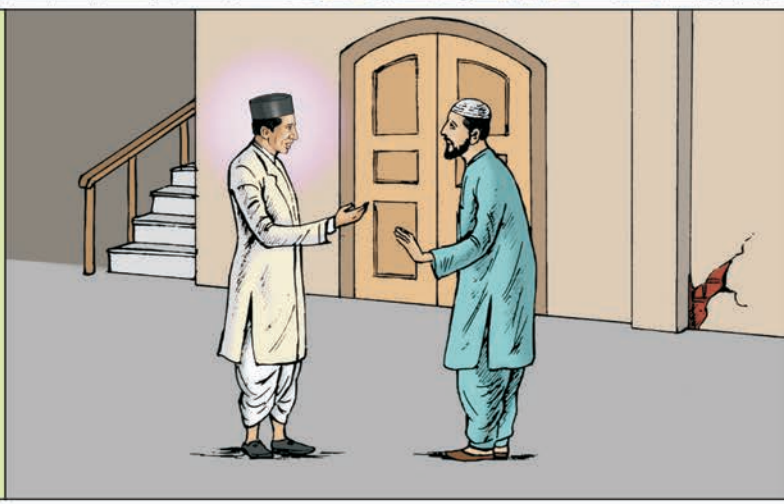

फिर एक बार गाड़ी में बड़ौदा से गुज़र रहे कमु मियाँ को अंबालालभाई ने रोका।

ऐसा कहकर कमु मियाँ ने वहीं पर गाड़ी खड़ी रखी।

कमु मियाँ ने वहीं तीन सौ रुपये का चेक लिख दिया। सवा दो सौ के बदले तीन सौ रुपये चुकाए।

अंबालालभाई के अध्यात्म का इतना गहरा असर था कि कोई भी उनकी उपस्थिति में उनके साथ आड़ाई या लुच्चापन नहीं कर सकता था।

एक बार पालेज-बारेजा के सामने छोटा नाला बनाने का काम चल रहा था, तब रात को वापस लौटते समय अंबालालभाई को कुछ हिलता नज़र आया।

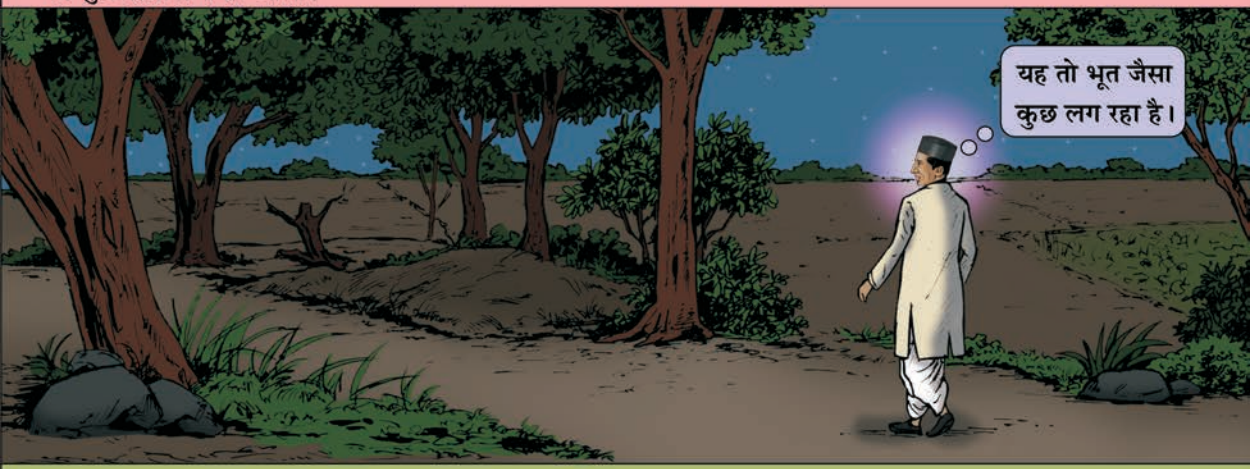

अंबालालभाई मूलत: तो क्षत्रिय प्रकृति, कभी किसी से डरते नहीं थे। किसी के सामने झुकते नहीं थे, ऐसी आदत थी।

१९३२ में जसेद में विश्वामित्री नदी के सामने ब्रिज बनाया था। उस समय साइट पर मकान लिया था। तो एक दिन रात के अंधेरे में साढ़े ग्यारह बजे साइकल लेकर वापस आते समय अंबालालभाई ने देखा कि महुआ के पेड़ के नीचे आग की लपटें निकलकर बुझ रही थीं।

शुरू से ही अंबालालभाई को भागने की आदत नहीं थी। हमला करने की ही आदत। वे तो साइकल की स्पीड बढ़ाकर सीधा भूत पर ही कूद पड़े।

साइकल गिरने से वह आदमी शोर मचाने लगा।

१९४२ में अंबालालभाई ने बड़ौदा में 'बिटको इन्जिनियरिंग कंपनी' शुरू की, खेती-बाड़ी के औज़ार बेचने का काम शुरू किया। लुहार, वर्कशोप सभी की व्यवस्था की थी। उसमें सरकार की तरफ से उन्हें हन्ड्रेड वेट का लोहा ११ रुपये के भाव से मिलता था। और उनके भागीदार कॉन्ट्रैक्ट के व्यापार के लिए लोहे के पाइप मंगवाते थे। उसके लिए सरकार की तरफ से एक फुट के डेढ़ आने के हिसाब से पाइप मिलते थे।

सरकार की तरफ से नियमित लोहे का क्वोटा आता रहता था। देखते ही देखते कंपनी में काफी सारा लोहा इकट्ठा हो गया लेकिन उतनी जल्दी खेती-बाड़ी के औजारों का उत्पादन करके बेचना संभव नहीं हो पा रहा था।

अंबालालभाई तो दिल के एकदम साफ थे। चोरी और कालाबाज़ारी की बिल्कुल भी नियत नहीं थी, लेकिन संयोग ऐसे आ गए कि बुद्धि ने मार खिला दी।

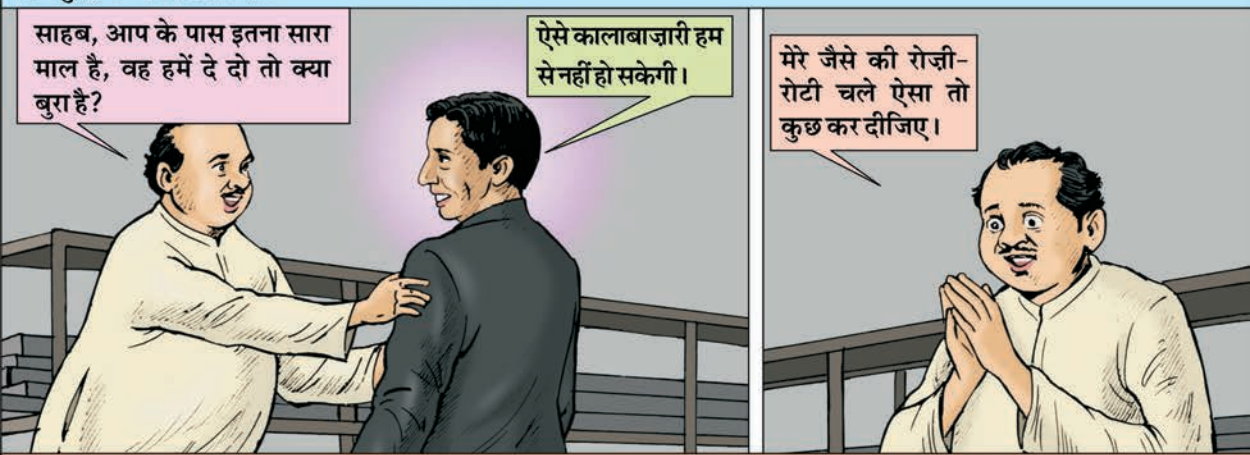

उस दलाल की आग्रह भरी युक्ति सुनकर अंबालालभाई धोखा खा गए। उस समय बाज़ार में लोहे का भाव ३२ रुपये चल रहा था। उस दलाल को मदद करने की भावना से २५ रुपये के भाव से उन्होंने लोहा बेच दिया। फिर तो देख लो मज़े। वह दलाल तो ऐसा लुच्चा निकला कि पूरा लोहा उसने बाज़ार में ३५ रुपये के भाव से बेचकर पैसे बनाए।

जब अंबालालभाई को इस बात का पता चला तब उन्हें खुद की गलती पकड़ में आई और बहुत दिल जला। लोगों का फायदा हो, ऐसा करने के बदले दलाल पर दया करके उसकी मदद करने गए, जबकि उसने लोगों को लूटा। ऐसा डबल चोर निकला।

जब अच्छे माँ-बाप का बेटा चोरी करे तब कैसा धक्का लगता है? माँ-बाप को रात को नींद आएगी क्या? वैसे ही अंबालालभाई को भी इस तरह धन इकट्ठा करने के बाद रात की नींद हराम हो गई। इस तरह व्यापार में फिसल पड़ना, सीधे और शुद्ध हृदय के अंबालालभाई को बहुत ही खराब लगा, बहुत अफसोस हुआ और रोम-रोम में यह बात चुभने लगी।

अंबालालभाई ने हृदय में खूब पछतावे सहित सौ प्रतिशत प्योरिटी के साथ व्यापार करने का निश्चय किया।

व्यापार में कमाई अच्छी थी, फिर भी सादगी भरा जीवन जीते थे। लेकिन रौब मारने के लिए कांतिभाई एक सेकन्ड हेन्ड गाड़ी ले आए।

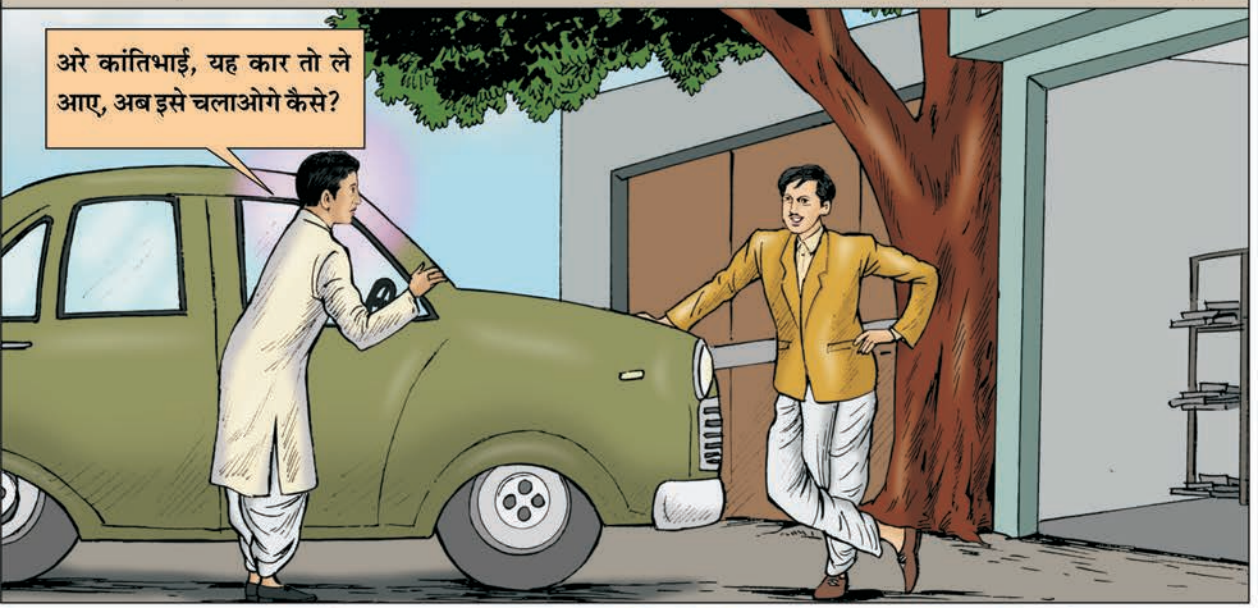

अंबालालभाई कहते थे कि मशीन के साथ काम करते-करते हृदय कठोर हो जाता है और लोगों के साथ काम करने से हृदय कोमल रहता है।

एक बार कुछ जैन लोग मामा की पोल में इकट्ठे होकर चर्चा कर रहे थे। अंबालालभाई वहाँ से गुज़र रहे थे तो उनके कान में 'जैनिस्तान' शब्द पड़ा।

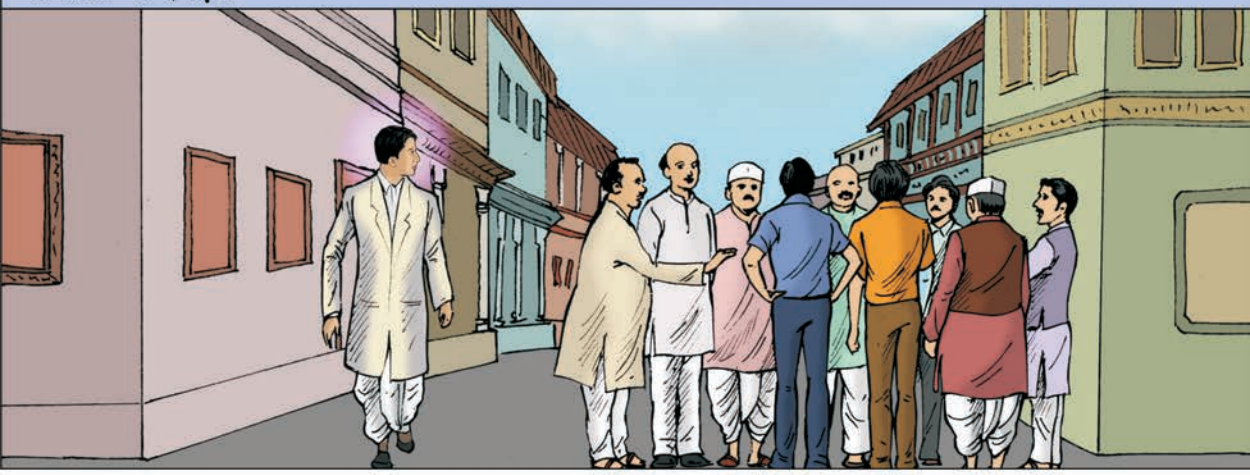

चलो भाई, कबूल। आप बहुत माँग करो और दबाव डालो तो कभी शायद आपको आपका जैनिस्तान मिल भी जाए, लेकिन आगे जाकर आप सारा काम कैसे चलाओगे, उसके बारे में कुछ सोचा है क्या? आप सब तो व्यापारी वर्ग के हो। तो फिर नाई, घोड़ागाड़ीवाला, सुथार, मज़दूर वगैरह कहाँ से लाओगे? उन सब के बिना आप का समाज कैसे चलेगा? आप व्यापारी वर्ग के हो, तो यह सब आप किस तरह कर पाओगे, ऐसा कुछ सोचा है क्या?

यों तो सभी समाज के बुद्धिशाली और समझदार लोग कहलाते हैं। फिर भी ऐसी भेदवाली विचार वाणी कान में पड़ी, इसलिए वे उन्हें सही बात समझाए बिना नहीं रह सके।

अंबालालभाई ने आधे घंटे तक अच्छी तरह समझाया तो वे सभी एकदम ठंडे पड़ गए। उल्टी समझ से हिन्दुस्तान के साथ भेद डालने का ज़ोर चढ़ा था, वह अंबालालभाई द्वारा सही समझ देने पर उतर गया। वे सब अंबालालभाई का आभार मानकर कहने लगे, 'अरे! हमसे बहुत बड़ी गलती हो जाती।'

एक बार अंबालालभाई घर के बाहर बरामदे में बैठे थे। तो दो लोग वहाँ से एक भैंस को लेकर जाते हुए दिखे। एक आदमी भैंस की रस्सी खींच रहा था। दूसरा आदमी भैंस को पीछे से एक लकड़ी से मार रहा था। रस्सी की वजह से उसका गला खिंच रहा था और वेदना हो रही थी। वह चलने में आनाकानी कर रही थी, लेकिन दोनों आदमी ज़बरदस्ती उसे खींचकर ले जा रहे थे।

अरे यह कोई विचित्र बात लग रही है। ये लोग क्यों इस भैंस को ऐसे खींचकर ले जा रहे हैं? और इतना गला खिंच रहा है और मार पड़ रही है, फिर भी भैंस ऐसी आड़ाई क्यों कर रही होगी?

इस घटना पर से सुंदर सार निकाला कि लोग भी ऐसी आड़ाई करके मार खाते हैं। उसके बजाय सरल हो जाएँ तो दोगुनी मार तो नहीं खानी पड़े।

अंबालालभाई मामा की पोल में रहते थे। उनकी पोल में ही दो जिनालय थे। वहाँ पर एक जिनालय में एक बार चतुर्मास करने के लिए एक महाराज साहब आकर रहे थे। सामान्य तौर पर रिवाज़ ऐसा था कि चौमासे के चार महीने पूरे होने पर देव दिवाली के बाद महाराज साहब विहार करके दूसरी जगह पर चले जाते थे।

महाराज साहब, अब तो आपका विहार करके जाने का समय हो गया है। आपके चतुर्मास पूरे हो गए और देव दिवाली के बाद भी पंद्रह दिन निकल गए है।

साहब, मेरे पैर में लगी गई थी, यह पक गया है और मुझे डायाबिटीज़ है इसलिए घाव जल्दी नहीं भरता। चलने में खूब तकलीफ हो रही है। थोड़े दिन और यहाँ पर रहने दीजिए।

नहीं महाराज साहब, वह संभव नहीं होगा। अब तो आपको विहार करके जाने का इंतजाम करना ही पड़ेगा।

साहब, हम विहार तो कर लेंगे। लेकिन महाराज साहब के लिए एक डोली की व्यवस्था कर दें तो अच्छा रहेगा।

माफ करना लेकिन अभी तक ऐसा कोई उदाहरण नहीं है जहाँ किसी के लिए डोली की गई हो। इसलिए हम ऐसा कोई इंतजाम नहीं कर सकेंगे।

महाराज साहब और उनके शिष्य बहुत उलझन में पड़ गए।

उनके शिष्य अंबालालभाई के घर पहुँचे।

धर्मलाभ।

पधारिए ! आज सुबह-सुबह कैसे पधारना हुआ? चाय के लिए आए हैं?

नहीं अंबालालकाका। आज तो एक नई ही उलझन लेकर आया हूँ, आपकी सलाह लेने।

अंदर आइए। बताइए, क्या उलझन है?

इस मंदिर के कार्यकर्ता हमें विहार करके जाने को कह रहे हैं। महाराज साहब का पैर खूब पक गया है और डायाबिटीज़ होने की वजह से घाव जल्दी नहीं भर रहा। इससे उन्हें चलने में खूब तकलीफ है। हमने विनती की कि एक डोली करवा दीजिए ताकि हम विहार करके जा सकें।

ठीक है। तो फिर क्या कहा कार्यकर्ताओं ने?

उन लोगों ने डोली के लिए मना किया है।

अरे, ऐसा जवाब दिया? अच्छा, मुझे बताओ डोली करने में कितना खर्चा आएगा?

अरे अरे ! कैसी दयाजनक स्थिति है। ये वीतराग मार्ग पर चलनेवाले लोग कैसी गलती कर बैठते हैं। कैसे आग्रही बन जाते हैं।

उन्होंने ऐसा कहा है कि पचास रुपये लेंगे।

तो फिर चलो, वे पचास रुपये मेरे पास से ले जाओ और डोली करवा लो। अब आप परेशान मत होना और चिंता मत करना।

फिर तो अंबालालभाई ने बंदोबस्त करके डोली मंगवाई। मंदिर के कार्यकर्ता महाराज साहब को वापस भेजने के लिए बेन्ड बाजे का फर्स्ट क्लास बंदोबस्त किया। पूरा संघ बाजे-गाजे के साथ महाराज साहब को डोली में बिठाकर छाणी गाँव तक पहुँचा आया। अंबालालभाई भी अपना लंबा कोट पहनकर महाराज साहब को विदा करने गए।

अंबालालभाई को ऐसे पुराने रीति-रिवाज़ पसंद थे।

विवाहित जीवन के प्रथम तीस सालों में अंबालालभाई खुद गली के नुक्कड़ पर सब्ज़ी लेने जाते थे।

उस समय युवक संघ नियमित न्यूज़ पेपर लेता था। वे सब इकट्ठे होकर गली के नुक्कड़ पर बैठकर पढ़ते थे।

कभी-कभी जब अंबालालभाई को समाचार पढ़ने की इच्छा होती, तब वे भी उन लोगों के साथ वहाँ पर जाकर अखबार पढ़ते थे।

क्षण भर में वहाँ से हटकर अंबालालभाई वापस मुड़ जाते। किसी भी गंध को पहचान लें, उनकी घ्राणेन्द्रिय इतनी पावरफुल थी।

अंबालालभाई को अलग-अलग प्राणियों का निरीक्षण करना बहुत ही पसंद था। उनकी तरह-तरह की आदतों का निरीक्षण करके वे पहचान लेते। उनकी और मनुष्यों की आदतों में साम्य ढूँढते।

'अरे भाई, तू बिना बात के क्यों इतनी जागृति रखता है? न तो तेरी ज़मीन है, न ही तेरा घर है। न तो तेरी दुकान है, न घर-बार है, लेना-देना नहीं, फिर भी बिना बात के पूरी रात क्यों भौंकता रहता होगा?' क्या मान बैठा है?' यह सब हमारा हैं और सभी को संभालना हमारा फर्ज है।' ऐसा मान बैठे होंगे। मालिक की हर एक चीज़ की चौकीदारी करने की ज़िम्मेदारी खुद की समझ बैठा है। इसीलिए रात को जागकर भौंकता रहता है न। अरे भाई, तूने पूरा खाना नहीं खाया और सिर्फ एक टुकड़ा खाकर सो रहा होगा, फिर भी तेरा मालिक तेरा भौंकना सुनकर तुझ बिचारे को मारने आएगा कि 'तू मुझे सोने नहीं दे रहा है।' ऐसे मालिक के प्रति क्या वफादारी रखनी? जहाँ नहीं बोलना हो, वहाँ पर बिना बात के बोलना उसे कहते हैं, 'भौंक रहा है।' उसी तरह लोग भी भौंकते रहते हैं।

एक बार अंबालालभाई ने एक कुत्ते को बैलगाड़ी के नीचे चलता हुआ देखा। आगे चल रहे दोनों बैलों को देखता जा रहा था और ऐसे आस पास देखता जाता और गाड़ी के नीचे चलता जा रहा था।

नरसिंह महेता ने बिल्कुल सच ही कहा है, 'शकट नो भार जेम श्वान ताणे।' उसी तरह इस कुत्ते को लग रहा था कि मैं ही गाड़ी चला रहा हूँ। सचमुच में उसकी चाल में उसकी मान्यता दिख रही थी कि मेरी वजह से ही यह पूरी गाड़ी चल रही है। उसी तरह लोग भी सिर्फ अहंकार ही करते हैं कि मेरी वजह से ही यह सब चल रहा है। वास्तव में तो कितने सारे संयोग इकट्ठे होने के बाद एक कार्य हो पाता है। उसमें उसका कोई कर्तापन है ही नहीं। अहंकार की उल्टी मान्यता को समझने के लिए यह उदाहरण कितना सही है।

एक बार एक कुत्ता अंबालालभाई के घर के दरवाज़े के सामने आकर खड़ा हो गया। खड़ा तो था दरवाज़े के बाहर, लेकिन मुँह अंदर रखकर। अंबालालभाई में दया बहुत थी न! इसलिए तुरंत सोचा कि ये भूखा होगा, खाना माँगने आया है।

अंबालालभाई ने जाली की अलमारी में से रोटी निकाली और दरवाज़े के बाहर कुत्ते के सामने रख आए। कुत्ता वहीं पर खड़े-खड़े रोटी खा गया।

हीरा बा ने दूसरी रोटी डाली, कुत्ता वह भी खा गया।

दूसरे दिन सुबह हुई कि वापस से वह कुत्ता वहाँ पर आकर खड़ा रह गया।

उसके बाद फिर अंबालालभाई को खुद की गलती का पता चला। पहली बार घर के बाहर खिलाकर गलती कर दी न। इसलिए अगली बार जब वह कुत्ता आया तो उसे गली में जहाँ कुत्तों को खिलाने की जगह थी, वहाँ जाकर रोटी रख आए। ऐसा दो-तीन बार किया, उसके बाद उस कुत्ते ने भी घर पर आकर माँगना बंद कर दिया।

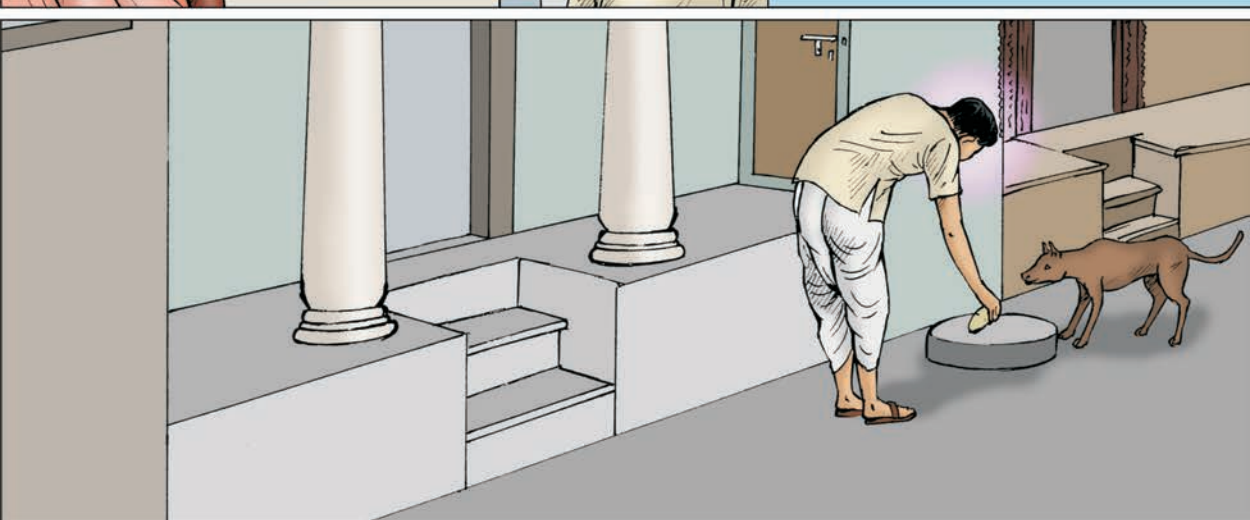

कुत्ते पर हाथ फेरेंगे, तभी अगले दिन फिर से आएगा न। जिसे मोक्ष में जाना हो उसे इन मिश्रचेतन का संग करने जैसा नहीं है। कुत्ता, बिल्ली भले कुछ भी हो, अरे इन्सान हो तो भी। मिश्रचेतन से लंबी पहचान करने जैसा नहीं है। उनके साथ जान-पहचान बढ़ाने से तो ऐसी बंधनकारी आसक्ति खड़ी हो जाती है न!

अंबालालभाई को याद आया कि बचपन में वे बहुत मज़ाकिया स्वभाव के थे, इसलिए एक बार मज़ाक की थी।

उनके पिता जी ने उन्हें एक सेठ के यहाँ किसी काम के लिए चिट्ठी लेकर भेजा था।

धीरे से अंबालालभाई ने कुत्ते की पूंछ पकड़कर ज़ोर से दबा दी। कुत्ता चीख उठा। कुत्ते ने घबराकर, जिस हाथ से सेठ उसे सहला रहे थे, उस हाथ पर काट लिया। सेठ गुस्सा होकर कुत्ते को मारने लगे।

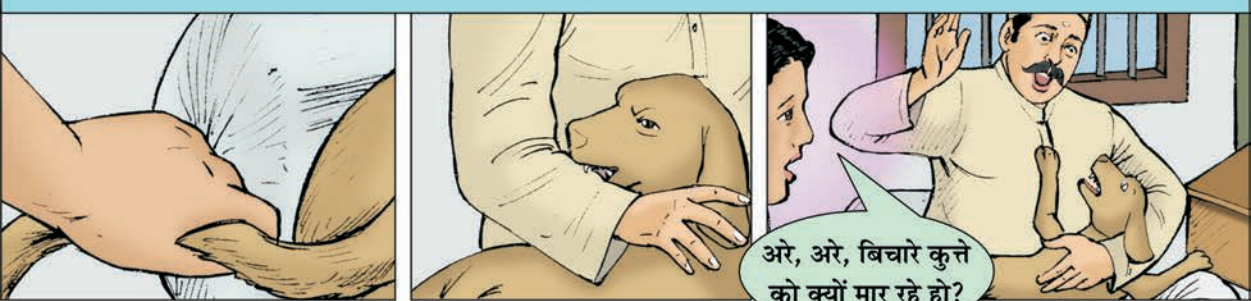

इसी तरह लोग भी निमित्त को दोषित मानकर काटने दौड़ते हैं न।

तो पाठक मित्रों, उनके जीवन के आगे के वर्षों में एक-एक संयोग में से गुज़रते हुए उनमें से उनके द्वारा निकाले गए एक से बढ़कर एक सार को जानने के लिए और उनके अनुभव के निचोड़ में से मिली उमदा सीख भाग-५ में समझेंगे...

बालविज्ञान की अन्य प्रकाशित पुस्तकें

गुजराती और अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध

स्टोरी बुक

मन्थली मैगज़ीन

युवाओं के लिए
Akram youth

बच्चों के लिए
अक्रम एक्सप्रेस

दादा भगवान सचित्र

मानव में से महामानव (नील) सीरीज़ बुक

गेम्स

V.C.D. & D.V.D.

वेबसाइट

Visit kids.dadabhagwan.org

घटनाएँ तो जैसी अपनी जीवन में घटती है, वैसी ही ज्ञानी के जीवन में भी घटती है लेकिन हम उसे पूरा करते हैं और वे निकाल करते हैं उसमें बहुत फर्क होता है। बचपन से ही उनमें विकसित हुई बोधकला और ज्ञानकला, उनके व्यवहार के हर एक उलझनों को सरलता से और किसी को भी दुःख न पहुँचे उस तरह हल ला सकती थी। इस तरह की कई चाबियाँ हमें इस पुस्तिका में से मिलेगी।

dadabhagwan.org

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

ISBN 978-93-82128-44-1

Printed in India

MRP ₹45